यश ठाकुर प्रसाद पंचाङ्ग फरवरी 2025

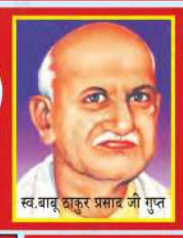

सावित्री ठाकुर प्रकाशन ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर वाराणसी

दूध का विवरण

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16			योग		

कपड़ा धुलाई का विवरण

तारीख	विवरण कपड़ा	संख्या

अखबार का विवरण

दिनांक	8	16	24
1	9	17	25
2	10	18	26
3	11	19	27
4	12	20	28
5	13	21	
6	14	22	
7	15	23	

आवश्यक कार्यक्रम

आकाशीय लक्षण

वायु संचार के साथ शीत का प्रकोप जारी रहेगा। पूर्वोत्तरीय प्रदेशों में शिमला, हिमाचल प्रदेश राजस्थान, दिल्ली में वायु वेग के साथ, मेघ गर्जना एवं ओला वृष्टि होगी। मासान्त में शीत का प्रकोप रहेगा। कहीं-कहीं हल्की बूंदा-बांदी होगी। ता.10, 11,14,16 को वायु वेग के साथ वर्षा हो सकती है।

विक्रम संवत् 2081 — FEBRUARY

माघ शुक्ल 3 से फाल्गुन शुक्ल 1 तक।
तारीख 13 फरवरी से फाल्गुन माह प्रारम्भ।।

शालिवाहन शाके 1946

राष्ट्रीय माघ 12 से राष्ट्रीय फाल्गुन 9 तक।
ता.20 फरवरी से राष्ट्रीय फाल्गुन प्रारम्भ।।

फसली संवत् 1432

फसली माघ 19 से फसली फाल्गुन 16 तक।
ता.13 फरवरी से फसली फाल्गुन माह प्रारम्भ।।

इस्लामी हिजरी 1446

सावान 1 से सावान 28 तक।
ता.1 फरवरी से सावान माह प्रारम्भ।।

बंगला संवत् 1431

बंगला माघ 18 से बंगला फाल्गुन 18 तक।
ता.13 फरवरी से बंगला फाल्गुन माह प्रारम्भ।

नेपाली संवत् 1145

नेपाली माघ 19 से नेपाली फाल्गुन 17 तक।
ता.12 फरवरी से नेपाली फाल्गुन माह प्रारम्भ।

विवाह मुहूर्त

ता.	वार	नक्षत्र
2	रवि.	उ.भा.
3	सोम.	रेवती
6	गुरु.	रोहिणी
7	शुक्र.	रोहिणी
12	बुध.	मघा
14	शुक्र.	उ.फा.
16	रवि.	हस्त
18	मंगल.	स्वाती
23	रवि.	मूल
25	मंगल.	उ.षा.

रवि SUN	माघ शुक्ल 4 घं.09/14 मीन का चंद्र उ.भा.24/52 **2** बसंत पञ्चमी राष्ट्रीय माघ 13 सावान 2 बंगला 19 नेपाली 20	माघ शुक्ल 12 घं.19/15 मिथुन का चंद्र आर्द्रा 17/52 **9** राष्ट्रीय माघ 20 सावान 9 बंगला 26 नेपाली 27	फाल्गुन कृष्ण 4 घं.26/16 कन्या का चंद्र हस्त 28/31 **16** राष्ट्रीय माघ 27 सावान 16 बंगला 4 नेपाली 5	फाल्गुन कृष्ण 10 घं.13/56 धनु का चंद्र मूल 18/42 **23** राष्ट्रीय माघ 4 सावान 23 बंगला 11 नेपाली 12
सोम MON	माघ शुक्ल घं. मेष चंद्र 23/16 रेवती 23/16 **3** राष्ट्रीय माघ 14 सावान 3 बंगला 20 नेपाली 21	माघ शुक्ल 13 घं.18/57 कर्क चंद्र 11/56 पुन.18/00 **10** प्रदोष व्रत राष्ट्रीय माघ 21 सावान 10 बंगला 27 नेपाली 28	फाल्गुन कृष्ण 5 घं.28/53 तुला चंद्र 18/2 चित्रा 30/00 **17** राष्ट्रीय माघ 28 सावान 17 बंगला 5 नेपाली 6	फाल्गुन कृष्ण 11 घं.13/45 मकर चंद्र 24/55 पू.षा.18/58 **24** एकादशी व्रत राष्ट्रीय माघ 5 सावान 24 बंगला 12 नेपाली 13
मंगल TUE	माघ शुक्ल 7 घं.26/30 मेष का चंद्र अश्विनी 21/49 **4** राष्ट्रीय माघ 15 सावान 4 बंगला 21 नेपाली 22	माघ शुक्ल 14 घं.18/55 कर्क का चंद्र पुष्य 18/33 **11** राष्ट्रीय माघ 22 सावान 11 बंगला 28 नेपाली 29	फाल्गुन कृष्ण 6 घं.30/00 तुला का चंद्र चित्रा 07/35 **18** राष्ट्रीय माघ 29 सावान 18 बंगला 6 नेपाली 7	फाल्गुन कृष्ण 12 घं.12/47 मकर का चंद्र उ.षा.18/30 **25** प्रदोष व्रत राष्ट्रीय माघ 6 सावान 25 बंगला 13 नेपाली 14
बुध WED	माघ शुक्ल 8 घं.24/35 वृष चंद्र 26/15 भरणी 20/33 **5** राष्ट्रीय माघ 16 सावान 5 बंगला 22 नेपाली 23	माघ शुक्ल 15 घं.19/23 सिंह चंद्र 19/35 आ.19/35 **12** रविदास जयन्ती पूर्णिमा राष्ट्रीय माघ 23 सावान 12 बंगला 29 नेपाली 1	फाल्गुन कृष्ण 6 घं.7/32 तुला का चंद्र स्वाती 10/39 **19** राष्ट्रीय माघ 30 सावान 19 बंगला 7 नेपाली 8	फाल्गुन कृष्ण 13 घं.11/08 कुंभ चंद्र 28/36 श्रव.17/32 **26** महाशिवरात्रि राष्ट्रीय माघ 7 सावान 26 बंगला 14 नेपाली 15
गुरु THU	पंचक- ता.3 को पंचक समाप्त घं.23 मि.16 बजे तक। ता.26 घं.28 मि.36 बजे पंचक प्रारम्भ।	माघ शुक्ल 9 घं.22/53 वृष का चंद्र कृत्तिका 19/29 **6** राष्ट्रीय माघ 17 सावान 6 बंगला 23 नेपाली 24	फाल्गुन कृष्ण 1 घं.20/21 सिंह का चंद्र मघा 21/07 **13** राष्ट्रीय माघ 24 सावान 13 बंगला 1 नेपाली 2	फाल्गुन कृष्ण 7 घं.9/58 वृश्चि.चंद्र 6/49 विशा.13/30 **20** राष्ट्रीय माघ 1 सावान 20 बंगला 8 नेपाली 9	फाल्गुन कृष्ण घं. कुंभ का चंद्र धनिष्ठा 15/43 **27** अमावस्या राष्ट्रीय माघ 8 सावान 27 बंगला 15 नेपाली 16
शुक्र FRI		माघ शुक्ल 10 घं.21/26 मिथुन चंद्र 30/31 रोहि.18/39 **7** राष्ट्रीय माघ 18 सावान 7 बंगला 24 नेपाली 25	फाल्गुन कृष्ण 2 घं.22/52 कन्या चंद्र 29/44 पू.फा.23/09 **14** राष्ट्रीय माघ 25 सावान 14 बंगला 2 नेपाली 3	फाल्गुन कृष्ण 8 घं.11/57 वृश्चि.का चंद्र अनुराधा 15/53 **21** राष्ट्रीय माघ 2 सावान 21 बंगला 9 नेपाली 10	फाल्गुन शुक्ल 1 घं.27/16 मीन चंद्र 29/57 शत.13/40 **28** राष्ट्रीय माघ 9 सावान 28 बंगला 16 नेपाली 17
शनि SAT	माघ शुक्ल 3 घं.11/38 मीन चंद्र 20/58 पू.भा.26/32 **1** राष्ट्रीय माघ 12 सावान 1 बंगला 18 नेपाली 19	माघ शुक्ल 11 घं.20/16 मिथुन का चंद्र मृग.18/06 **8** एकादशी व्रत राष्ट्रीय माघ 19 सावान 8 बंगला 25 नेपाली 26	फाल्गुन कृष्ण 3 घं.23/52 कन्या का चंद्र उ.फा.25/39 **15** राष्ट्रीय माघ 26 सावान 15 बंगला 3 नेपाली 4	फाल्गुन कृष्ण 9 घं.13/19 धनु चंद्र 17/40 ज्येष्ठा 17/40 **22** राष्ट्रीय माघ 3 सावान 22 बंगला 10 नेपाली 11

दिनांक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
सूर्योदय	6/45	6/45	6/45	6/44	6/44	6/43	6/43	6/42	6/41	6/41	6/40	6/40	6/39	6/38	6/38	6/37	6/36	6/36	6/35	6/34	6/33	6/32	6/31	6/31	6/30	6/29	6/28	6/27
सूर्यास्त	5/38	5/38	5/39	5/40	5/41	5/41	5/42	5/43	5/43	5/44	5/45	5/45	5/46	5/47	5/47	5/48	5/49	5/49	5/50	5/50	5/51	5/52	5/52	5/53	5/53	5/54	5/54	5/55

व्रत-त्यौहार

1	शनि.	वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी, तिल चतुर्थी
2	रवि.	बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजा
3	सोम.	मंदर षष्ठी
4	मंगल.	भानू सप्तमी, बुध सप्तमी
5	बुध.	भीष्माष्टमी
6	गुरु.	हरसू ब्रह्म जयन्ती (रोहतास)
7	शुक्र.	भक्त पुण्डरीक उत्सव
8	शनि.	जया एकादशी व्रत
9	रवि.	भीष्म द्वादशी
10	सोम.	सोम प्रदोष व्रत, कल्पादि
12	बुध.	स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा,माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा संत रविदास जयन्ती
15	शनि.	शब-ए-बरात
16	रवि.	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी
20	गुरु.	कालाष्टमी अष्टका श्राद्ध
21	शुक्र.	जानकी व्रत
22	शनि.	रामदास नवमी
24	सोम.	विजया एकादाशी व्रत
25	मंगल.	भौम प्रदोष व्रत
26	बुध.	महाशिवरात्रि
27	गुरु.	स्नान-दान श्राद्ध की अमावस्या

राशि-फल

मेष- रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। स्वास्थ्य लाभ, साहस पराक्रम की वृद्धि।

वृष- पारिवारिक सहयोग प्राप्त, धार्मिक कार्यों में रुचि, व्यापारिक लाभ।

मिथुन- पुरातत्व सम्बन्धी लाभ, क्रोध पर संयम रखें, मान सम्मान में वृद्धि।

कर्क- सत्तापक्ष से सहयोग, व्यापार लाभ यात्रा से मन प्रसन्न, वाहनसुख।

सिंह- धार्मिक कार्यों में रूचि, रोजगार में बाधा दूर, पत्नी से लाभ प्रतिष्ठा।

कन्या- चिन्ताओं से बचे, स्वजनों से लाभ दिनचर्या उत्तम, रोजगार में उन्नति।

तुला- रोग-शोक, संताप से अशांति, धर्म कर्म में रुचि, वाहन सुख, यशवृद्धि

वृश्चिक- व्यय की अधिकता, मान-सम्मान रोजगार में सफलता, पुत्रलाभ।

धनु- व्यर्थ की भागदौड़, धन की प्राप्ति, मान-सम्मान, रूके कार्य पूर्ण।

मकर- व्यापार में विस्तार, सामाजिक मान सम्मान, स्वास्थ्य में उत्तम सुधार।

कुम्भ- पारिवारिक सदस्यों से लाभ, शत्रु बाधा निवारण, पत्नी-पुत्र से लाभ

मीन- नौकरी व व्यवसाय सामान्य, पुत्र से सहयोग, वाहन व धन की प्राप्ति।

तेजी-मंदी

तेजी मन्दी का मिलाजुला असर देखने को मिलेगा। तेजी के चलते अचानक मन्दी का झटका लग सकता है। अन्न आदि के भाव सम रहेंगे। गेहूँ, चना, जौ,ज्वार आदि धान्यादि भावों में गिरावट होगी। अलसी, मूंग, अरहर के भाव सम रहेंगे। रस, कस, दूध दही व फलों के भाव में तेजी। सोना-चांदी तेज रहेगा। लौंग किराना मेवा आदि में तेजी, जीरा, हल्दी तेज हो, सर्राफा बाजार में घट-बढ़ हो, शेयर बाजार में दो तरफा रुख रहेगा।

जनवरी 2025

रवि		5	12	19	
सोम		6	13	20	27
मंगल		7		21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरु	2	9	16		30
शुक्र	3	10		24	31
शनि	4	11	18	25	

मार्च 2025

रवि		2	9	16	23
सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6		20	27
शुक्र		7		21	28
शनि	1	8	15	22	29

प्रणेता-स्व.डॉ.रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' सम्पादक-दिव्या त्रिपाठी 151 ए, यशोदा नगर, कानपुर-11 Mob. 09451220392

वेद पुराण, ज्योतिष आदि धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख प्रकाशक

सावित्री ठाकुर प्रकाशन

नाटीइमली, वाराणसी। Mob : 9369516832

पंचांग पर अपना नाम पता छपवाकर बाँटने वाले सज्जन प्रकाशक से 9889820399 पर सम्पर्क करें। उन्हें पंचांग उचित मूल्य पर दिया जायेगा।

अधिकृत विक्रेता-ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुक्सेलर, राजादरवाजा, वाराणसी। फोन-0542-2413650

2025

संवत्सर फल

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत्सर का आरम्भ होता है। इस वर्ष संवत्सर २०८२ विक्रमीय संवत्सर का नाम **पिंगल** है। यह ६० संवत्सरों में विष्णु आदि वीसी के बारहवें युग में, जिसका स्वामी अश्विनी कुमार है। ५१वाँ **कालयुक्त (काल)** संवत्सर है। ग्रह योग की दृष्टि से इस संवत्सर में ग्रह मण्डल की सभा में ४ स्थान सौम्य ग्रहों ने प्राप्त किये है बाकी अन्य स्थान क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए है।

इस वर्ष का **राजा-सूर्य, मन्त्री-रवि**, सस्येश-बुध , धान्येश-चन्द्र, मेघेश-रवि, रसेष-शुक्र , निरशेष-बुध, फलेश-शनि, धनेष-मंगल, दुर्गेश-शनि है। इस संवत्सर की लग्न सिंह तथा राशि मीन है। लग्न का स्वामी सूर्य तथा राशि का स्वामी देवगुरु-बृहस्पति है। अतः इस सवत्सर की लग्न लग्नेश सूर्य सूर्य धनेश और लाभेश बुध, पराक्रमेश और दशमेश शुक्र, तथा व्ययेश चन्द्र अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में होने के कारण इस संत्सर में रोगो की वृद्धि के साथ-साथ गुप्त योजनाए जोकि प्रभावी होती हुई नजर आयेगी। सुखेश और भाग्येश मंगल लाभ भाव में स्थित है। पंचमेश और अष्टमेश गुरु दशमभाव में स्थित है। गुरु और शुक्र का राशि परिवर्तन होना बन रहा है। शनि स्वयं की राशि में सप्तम भाव में स्थित है परन्तु षष्ठेश दोष से पीड़ित है। राहु अष्टम तथा केतु द्वितीय भाव में स्थित है। अतः जनता सुखी-सम्पन्न और निर्भय होगी। मनोरंजन और पर्यटन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सैन्य व्यवस्था और सुदृढ़ होगी। किन्तु कठोर आर्थिक नियमों का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक अपराधों पर नियन्त्रण होगा। करापवचन करने वालों पर कड़ी कार्यवाही होगी। सेना में आधुनिक पोतो, जलयानो और विमानो का संग्रह होगा। सीमा सुरक्षा के आधुनिक उपकरण और उपाये किये जायेगें । ग्रीष्म कालीन धान्य उत्तम होगा। शरद कालीन धान्य में कमी होगी। फल, खनिज, रसायन पदार्थ के उत्पादन में वृद्धि होगी। वर्षा उत्तम होगी। सरकारी कोष में वृद्धि होगी। धातुओं में मंदी होगी। प्रजा सुखी होगी शिक्षा के साधनों में वृद्धि होगी।

दसों अधिकारियों का क्रमशः फल

१. राजा-रवि-फल कम लगे, वर्षाकम हो, गाय दूध कम देवे, मनुष्यों में पीड़ा, धान्य कम हो, आग की बाधा हो, राजाओं का नाश हो। **२. मन्त्री-रवि**-इस संवत्सर का मंत्री सूर्य है, अतः राजा, रोग और चोरो का भय बढ़े, पृथ्वी पर धन धान्य अधिक हो। **३. सस्येश-बुध**-सस्येश बुध होने के कारण जल अच्छा हो सुख समृद्धि हो किसी प्रकार का उपद्रव नहीं हो ब्राह्म लोग वेद पाठ करें। **४. धान्येश चन्द्र**-धान्येश चन्द्र होने के कारण चन्द्रमा धान्याधिप हो तो प्रजा में उत्पत्ति अधिक हो। गेहूँ, सरसो और गौ, दुग्ध अधिक हो। **५. दुर्गेश शनि** -दुर्गेश शनि होने के कारण दुनिया में इतने विग्रह उत्पन्न हो जिसमे लोग चल विचल हो जाय नागरिक लोगो में नाना प्रकार के बैर बढ़े खेती को टीड़ी और चूहों से हानि हो। **६. मेघेश रवि**-मेघेश रवि होने के कारण जौ, चना, ईख, नीवार (ओईरी) और चावल आदि अच्छे उपजे पृथ्वी पर सुख संचय वर्तमान रहें। **७. रसेश शुक्र**-रसेश शुक्र होने के कारण शुक्र रसेश हो तो लोग उत्सवादि करने में उत्सुक रहें और उनके मन सन्तुष्ट रहें। **८. नीरसेश बुध**-नीरसेश बुध होने के कारण छींट के कप ड़े शंख,चंदन आदि सस्ते हो। **९. फलेश शनि**-फलेश शनि होने के कारण फल हानि हो, वृक्षो में पुष्प निष्फल हो। **१०.धनेश मंगल** -धनेश मंगल होने के कारण शयेर बाजार में उथल-पुथल हो। गेहूं की खेती नष्ट हो। मार्गशीर्ष मास में विक्रय करने से संग्रहित वस्तुओं में दुगना लाभ होगा।

स्तम्भ चतुष्टय फल-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग लगभग ५५ प्रतिशत है। अतः जल का स्तम्भ सामान्य रहेगा। वर्षा सामान्य होगी और कृषि की स्थिति भी सामान्य होगी। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग ७० प्रतिशत है। अतः तृण का स्तम्भ मजबूत है। भूसा, चारा, पशुआहार का उत्पादन अच्छा हो। दूध, घी की पैदावार ज्यादा है। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का योग लगभग ८८ प्रतिशत है। अतः वायु का स्तम्भ बहुत सुदृढ़ है। फलस्वरुप अव्याधिक वेग संचार की गति अच्छी है। यत्र-तत्र सर्वत्र अच्छी वर्षा हो। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग लगभग ८० प्रतिशत है। अन्न का स्तम्भ भी काफी सुदृढ़ है। अन्न उत्पादन में वृद्धि होगी, मंहगाई में कमी होगी। **नागफल**-द्वादश नागो में इस वर्ष कर्कोटक नामक ननाग है। अतः इस वर्ष वर्षा का अभाव हो, राजाओं की मृत्यु हो। **मेघफल**-संवत नामक मेघ होने के कारण कार्यो में वृद्धि, धार्मिक कार्यों में कमी। **रोहिणी निवास**-इस वर्ष रोहिणी निवास संधि में है। अतः खण्डवृष्टि हो। खेती सूखे नहीं। **समय निवास**-इस वर्ष समय निवास वैश्य के घर पर है। **समय वाहन**-इस वर्ष समय का वाहन अश्व है।

गुर्रा फल-ता.२ जुलाई २०२५ ई. दिन बुधवार को हिजरी संवत् १४४७ को नये हिजरी संम्वत का प्रारम्भ हो रहा है। अतः इसका स्वामी बुध है। गुर्रा का आधिपत्य बुध होने से प्रजा में परस्पर लड़ाई-झगड़े, रोग-द्वेष की वृद्धि, पशुओं को पीड़ा टिड्डी का उपद्रव, पवन, तृग, शीत, खरबूजा आदि अधिक होवें।

गुरोदय मानेन वर्ष-इस वर्ष आर्द्रा नक्षत्र में गुरु उदय होने के कारण मृगशिरा संज्ञक वर्ष है। मार्गशीर्ष वर्ष हो तो वर्षा कम हो खेती नष्ट हो और परस्पर में मार डालने की इच्छा करके राजा लोक युद्ध में फंसे।

वर्षा आदि के विश्वा-विशोंतरी मतेन उत्पत्ति विश्वा १२३।, खपति विश्वा ७४, वर्षा विश्वा ११।, धान्यम् ११।, तृणम् ५, शीतम् १३।, तेज १७, वायु १३।, वृद्धि १५।, विग्रह ११।, ऐक्यम ११, क्षुधा ७।, तृष्णा ११।, निद्रा ९।, आलस्य १३।, उद्यम १।, शान्ति ३।, क्रोध ९।, दण्ड १५।, मैत्री ९।, उत्सव ७।, पाप ७।, पुण्य ३।, उग्रत्व १५।, रसोत्पत्तिः १७।, फलोत्पत्तिः ७।, व्याधि ७।, व्याधिनाश ५।, अनाचार ११।, मरण ९।, जन्म १९।, चौर ९।, उपशमन १५।, अग्निभय ५।, अग्निशान्ति १५।, सव्यम ११, धर्म ९।।, पाप १८।, शनि दृष्टिरुतरे। ग्रहण २ चन्द्रमसः। उद्विजः १३।, जरायुः ३।, पिण्डजः ७।, स्वदेजः ११।

लाभ-खर्च मालूम करने की रीति-अपनी राशि के निचे लिखे उपरोक्त लाभ खर्च के अंको को जोड़े। जोड़ में १ अंक कम करके शेष को ८ से भाग दे। १ शेष बचे तो लाभ, २ से सौख्य, ३ से क्लेश, ४ से रोग, ५ लोकापवाद, ६ से सम्मान ७ से विजय, ८ से यानी ० से हानि का योग इस वर्ष में होता है। सारांश मे १,२,६ या ७ शेष बचने पर इस वर्ष लाभ, भाग्योदय, नौकरी धन्धे में तरक्की होगी। यदि ३,४,५,८ या ० बचे तो खर्च अधिक, आय कम, मानसिक चिन्ता बनी रहें।

न.१ विन्ध्योत्तर निवासियों के लिए विशोंत्तरी मतानुसार लाभ खर्च का विवरण

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	५	११७
खर्च	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२	७५

न.२ विन्ध्य से दक्षिण निवासियों के लिये अष्टोत्तरी मतानुसार लाभ खर्च का विवरण

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
लाभ	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५	९९
खर्च	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५	९३

लाभ-खर्च मालूम करने की रीति-अपनी राशि के निचे लिखे उपरोक्त लाभ खर्च के अंको को जोड़े। जोड़ में १ अंक कम करके शेष को ८ से भाग दे। १ शेष बचे तो लाभ, २ से सौख्य, ३ से क्लेश, ४ से रोग, ५ लोकापवाद, ६ से सम्मान ७ से विजय, ८ से यानी ० से हानि का योग इस वर्ष में होता है। सारांश मे १,२,६ या ७ शेष बचने पर इस वर्ष लाभ, भाग्योदय, नौकरी धन्धे में तरक्की होगी। यदि ३,४,५,८ या ० बचे तो खर्च अधिक, आय कम, मानसिक चिन्ता बनी रहें।

अंग फड़कने का फल

स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वी-लाभ	हस्त	द्रव्यलाभ
ललाट	स्थान-लाभ	वक्षस्थल	इष्ट-सिद्धि
दोनो भौं	महान सुख	कटि	उत्तम
बीच भौं	महान सुख	कटि-पार्श्व	उत्तमप्रीति
कपाल	वारंगन प्राप्ति	नाभि	स्त्रीनाश
नेत्र	प्रिय दर्शन	भग	पति-प्राप्ति
नेत्र-समीप	प्रिय समागम	लिंग	स्त्री-लाभ
नेत्रोर्ध्व	विजय	गुदा	वाहन-लाभ
कन्धा	भोग,समृद्धि	वृषण	पुत्र-लाभ
हनु	महाभय	वस्ति	अभ्युदय
ग्रीवा	शुत्र-भय	उरु	वस्त्रलाभ
उदर	कोष-लाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
कुक्षि	सुप्रीति-लाभ	जाँघ	स्वामी
मुख	मधुर भोजन	पाद	स्थानलाभ
भुज	प्रिय-प्राप्ति	पादतल	नृपत्वबुद्धि
भुज-मध्य	धनागम		

मैं और मेरे पिताजी

जब मैं ५ वर्ष हो गया—तब सोचता था कि मेरे पिता दुनियाँ के सबसे मजबूत और ताकतवर व्यक्ति हैं।

जब मैं १० वर्ष का हो गया—तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे पिता को दुनिया कि हर चीज के बारे में जानकारी है।

जब मैं १५ वर्ष का हो गया—तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे मित्रों के पिता मेरे पिता से ज्यादा समझदार हैं।

जब मैं २० वर्ष का हो गया—तब मैंने महसूस किया कि मेरे पिता को दुनिया के साथ चलने के लिए कुछ और ज्ञान की जरुरत हैं।

जब मैं २५ वर्ष का हो गया—मैंने महसूस किया कि मेरे पिता किसी और दुनिया के हैं, और वे हमारी सोच के साथ नहीं चल सकते।

जब मैं ३० वर्ष का हो गया—तब मैंने महसूस किया कि मुझे किसी भी काम के बारे में अपने पिता से सलाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनमें हर काम में कमी निकालने की आदत हो गयी है।

जब मैं ३५ वर्ष का हो गया—मैंने महसूस करने लगा कि मेरे पिता को मेरी नकल करके कुछ समझ आ गयी है।

जब मैं ४० वर्ष का हो गया—तब मैं महसूस करने लगा कि मेरे पिताजी की सलाह ली जा सकती है।

जब मैं ५० वर्ष का हो गया—तब मैंने फैसला किया कि मुझे अपने पिता की सलाह के बिना कुछ भी नहीं करना चाहिए। क्योंकि मुझे ज्ञान हो चुका था। कि मेरे पिता दुनिया के सबसे समझदार व्यक्ति हैं।

निष्कर्ष—पिताजी के फैसले और सुझाव पर चलने से ही हमारे परिवार व कार्य में सफलता की पूरी संभावना है।

नवग्रह से धन प्राप्ति के उपाय

१.सूर्य शान्ति से धन-प्राप्ति

१. घर में स्फटिक 'श्री यन्त्र' स्थापित करें एवं श्रीसूक्त का पाठ करें।

२. हरिवंश पुराण के अनुसार सिद्धिप्रद देवी की स्थापना करनी चाहिए।

३. आत्मबल बढ़ाना अभीष्ट हो तथा धन-प्राप्ति की विशेष इच्छा हो, तो "माणिक्य युक्त सूर्य यन्त्र" स्वर्ण धातु में पहनें।

४. हरिवंश पुराण की कथा करें तथा सूर्य को मीठा डालकर अर्ध्य दें।

५. माणिक्य धारण करें। माणिक्य के अभाव से तांबा धारण करें।

६. चारपाई के पायों में तांबे की कील गाड़े।

७. सूर्य नीच का हो, तो सूर्य की चीजों को दान न लें और सूर्य उच्च का हो, तो सूर्य की चीजों का दान न दें।

८. सूर्य के मन्त्रों का किसी ब्राह्मण से जप करावें।

९. सूर्य को प्रसन्न करने के लिए प्रातः जब आधा ही सूर्य उगे, तो लाल पुष्प डालकर सूर्य को नियमित अर्ध्य दें।

२. चन्द्र शान्ति से धन-प्राप्ति

१. चन्द्रमा को मजबूत करना हो तथा धन-प्राप्ति की इच्छा हो तो, "मोती युक्त चन्द्र यन्त्र" गले में धारण करें। २. अनिष्ट चन्द्रमा की शान्ति के लिए पूर्णिमा व्रत सहित चन्द्र मन्त्र का विधिवत् अनुष्ठान करना चाहिए।

३. दूध का बर्तन रात को सिराहने रखकर सुबह यज्ञीवृक्ष में डाले।

४. चारपायी के पायों में चांदी की कील गाड़नी चाहिए।

५. बहते पानी (गंगा) में स्नान करें।

६. घर की छत के नीचे कुआं या हैण्डपम्प नहीं लगायें।

७. चन्द्र का नीच का हो तो चन्द्र की चीजों का दान करें। यह उपाय ५,११ या ४३ दिन या सप्ताह या एक माह लगातार करे।

८. केतु के सात चन्द्र होने पर गणपति की उपासना करें।

९. चन्द्र निर्बलता में कैल्शियम की विशेष कमी हो जाती है, अतः उसका सेवन बहुत हितकर है।

१०.कर्क या वृष के निर्बल चन्द्र के लिए भगवती गौरी परांबा ललिता की आराधना करें।

३. मंगल शान्ति से धन-प्राप्ति

१. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिए 'मंगल यंत्र' धारण करें।

२. देवी भगवती का पाठन अथवा श्रवण करें।

३. ऋण निवृत्ति की इच्छा के साथ जिस जातक को धन संग्रह की कामना हो "मंगल यन्त्र" में मूंगे के साथ मोती लगायें, तो लक्ष्मी जी की कृपा हो जायेगी।

४. हरिवंश पुराण के अनुसार जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ का दान कराना चाहिए।

५. मंगल यंत्र निर्दोष मूंगा सहित धारण करें। यथाशक्ति गुड़ का दान भी हितकारी सिद्ध होता है।

६. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच स्तोत्र अथवा ऋण मोचन मंगल स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।

७. महागायत्री का पाठ करना, हनुमानजी की सिन्दूर लगाना एवं स्वयं भी हनुमान के पैरों में रखे हुए सिन्दूर लगायें।

८. मंगल अशुभ हो, तो गुड़,तिल को प्रवाहित करें।

९. मंगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगलव्रत सहित मंगल मन्त्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।

४. बुध शान्ति से धन प्राप्ति

१. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु चावल, शहद, सफेद सरसों, गोबर गोरोचन एवं नवारी मल्वत मिलाकर ७ बुधवार तक स्नान करें।

२. एक रत्ती स्वर्ण का बुधवार के दिन दान करें।

३. ग्यारह बुधवार तक एक मुट्ठी मूंग भिखारियों दान दें।

४. बुधवार का व्रत ५,११ या ४३ बार करें।

५. साबुत मूंग, हरी चीजें दान करें या जल में प्रवाह करें।

६. तांबे के सिक्के में छेद करके बहते पानी में बहायें।

७. पन्ना धारण करें। पन्ने के अभाव में धातु धारण करें।

८. लड़की, बहन, बुआ, साली की सेवा करे।

९. कौड़ियों को जलाकर बहते पानी में बहायें।

५. बृहस्पति शान्ति से धन प्राप्ति

१. गुरु को बलवान् करने एवं धन-प्राप्ति हेतु 'पुखराज युक्त गुरुयन्त्र' सोने में धारण करें।

२. गुरुलीलामृत का पाठन अथवा श्रवण करें।

३. हरि पूजन करें या पीपल का पालन करें।

४. शुद्ध सोना धारण करें।

५. पुखराज पहनें पुखराज के अभाव में हल्दी की गांठ, पीले रंग के धागे में बांधकर दायीं भुजा पर बांधे।

६. गुरु के कारण उत्पन्न समस्त अरिष्टों के शमन के लिए रुद्राष्टाध्यायी एवं शिवसहस्त्रनाम का पाठ अथवा नित्य रुद्राभिषेक करना अमोघ है।

७. पंचम भाव स्थित शनि, गुण के अरिष्ट शमनार्थ ४० दिन तक वटवृक्ष की १०८ प्रदक्षिणा करना हितकारी होता है।

८. चांदी की कटोरी में केसर/हल्दी का तिलक करना।

९. बृहस्पतिवार का व्रत ५,११ या ४३ बार रखना।

१०.प्रतिदिन स्नान के पश्चात् नाभि में केसर लगायें।

६.शुक्र शान्ति से धन-प्राप्ति

१. श्रीसूक्त लक्ष्मीसूक्त और कवच अथवा भाग्यशाली मन्त्र का जाप लाभकारी है।

२. विलम्ब विवाह में मोहिनी कवच या कामदेव मन्त्र का जाप कल्याणकारी होता है। ३. शुक्र मन्त्र का जप, स्तोत्र कवच या शतनाम के सहित करके सौन्दर्य लहरी का एक श्लोक पढ़ना चाहिए।

४. २१ शुक्रवार तक श्वेत वस्तुओं का दान करें।

५. शुक्रवार का व्रत ५,११, या ४३ बार करें।

६. घी, दही, कपूर, अदरक का दान करें।

७. हीरा पहनें, हीरे के अभाव में सच्चे मोती पहनें।

८. स्त्री का कहना मानें, स्त्री की सेवा करें और स्त्री से झगड़ा न करें।

९. प्रतिदिन श्रीसूक्त का पाठ करें।

७.शनि शान्ति से धन प्राप्ति

१. शनि व्रत के सहित भगवान् शिव पर नित्य दूध या तिल चढ़ावें।

२. भैरव उपासना और मन्त्र जप अतिशीघ्र यथेष्ट कल्याणप्रद सिद्ध होता है।

३. शनि स्तुति का वाचन अथवा श्रण करें।

४. शनिवार का व्रत ५,११ या ४३ बार करें।

५. सन्ध्या समय शनि मन्दिर के दर्शन करें।

६. काली भैंस का पालन करें, कालें सांप को दूध दें।

७. शनि की स्थिति देखकर नीलम धारण करें।

८. शनि के वैदिक या तान्त्रिक मन्त्र समस्त अरिष्टों को दूर करता है।

९. काले वस्त्रों एवं तिल का यथा सम्भव दान करें।

८. राहु शान्ति से धन-प्राप्ति

१. राहु को प्रसन्न करने हेतु 'गोमेद युक्त राहु यंत्र धारण करें।

२. गोमेद धारण करें। गोमेद के अभाव में सिक्का धारण करें।

३. 'नवनाथ' के १३ परायण करें।

४. श्रावण में प्रति सोमवार लघुरुद्र पाठ करें।

५. नागपंचमी को ताम्र अथवा रजत का नाग बनवाकर उसे पूजा स्थान पर स्थापित कर उसकी नियमित हल्दी, कुंकुम, नैवेद्य आदि से पूजन करें। कार्य हो जाने पर उन्हें ठण्डा करें।

६. छिन्नमस्ता मां का यंत्र चमत्कारी फलकारक है।

७. बटुक भैरव प्रयोग भी लाभकारी है।

८. औषधि स्नान एवं गूगल की नित्य धूप देना चाहिए।

९.परिवार से अलग न रहें या परिवार में मुखिया न बनें।

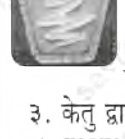

९.केतु शान्ति से धन-प्राप्ति

१. केतु के वैदिक या तान्त्रिक मन्त्र का जाप करें।

२. पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा एवं नाग प्रतिष्ठा भी लाभकारी।

३. केतु द्वादश नाम का नित्य पाठ करना चाहिए।

४. गुरुवार को यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान दें।

५. दत्त चरित्र के ११ परायण करें।

६. शनि एवं गुरु के होरा में निर्जल रहें।

७. लोहे के पात्र में जलादि ग्रहण करें।

८. अपना चाल-चलन ठीक रखना। ९. खटाई वाली चीजें नींबू, इमली या गोल-गप्पे लड़कियों को खिलायें। ●